जानवरों की अद्भुत दुनिया

कम्पैशनेट सिटीज़न 1

भाग 1/कुछ अजीब बातें जानवरों की.

जानवरों के बारे में, उनकी योग्यताओं और उनकी आदतों के बारे में जितना आप जानने की कोशिश करेंगे, उतना ही आप पर जाहिर होगा कि वाक़ई ये जानवर कितने अद्भुत और अजीब होते हैं. आइए हम आपको उनकी कुछ ऐसी दिलचस्प बातें बताएं, जिन्हें जान कर आप सचमुच हैरान हो जाएंगे.

✔ **डॉल्फ़िन** मछलियों के बारे में ऐसा पता चला है कि जब जहाज डूब जाता है तो ये मुसाफ़िरों को डूबने से बचाने के लिए आ जाती हैं. कभी कभी तो ये उन्हें हजारों कि.मी. दूर तक तैरने में मदद करती हैं.

✔ **कस्तूरी बैल और गाय** जब कभी किसी मुसीबत या खराब मौसम का सामना करते हैं तो अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए घेरा बना कर खड़े हो जाते हैं.

✔ देखा गया है कि **हाथियों** को पेन्टिंग यानी चित्रकला से बड़ा लगाव होता है. वो अपनी सूंड में चित्र बनाने का ब्रश और यहां तक कि पेड़ की टहनी पकड़ कर चित्र बनाते हैं.

✔ **लंगूर** बारिश से बचने के लिए अपने घर में ऊपर की तरफ़ छज्जा बनाते हैं और बड़े पत्तों को छाते की तरह इस्तेमाल करते हैं.

✔ बुलबुल की तरह एक पक्षी '**ब्लैकपोल वॉर्बलर**', कैनेडा से दक्षिण अमरीका तक सफ़र कर सकता है और फिर वापस अपने घोंसले में आ जाता है. वो अपना घोंसला कभी नहीं भूलता.

✔ **नर एम्परर पेंग्विन**, ऐन्टार्कटिका की कड़ाके की लगातार ठंड में भी अपनी मादा के अंडों की दो माह तक बराबर रक्षा करता और उसे सेता है. वो भी बिना कुछ खाए.

✔ **बिजली मछली (इलेक्ट्रिक मछली)** और सर्प मछली (ईल) एक दूसरे को अपना संदेश पहुंचाने के लिए बिजली की तरंगों का प्रयोग करते हैं.

भाग 2/जानवरों के बारे में आई क्यू टेस्ट (बुद्धि परीक्षा)

आइए देखें आप जानवरों के बारे में कितना जानते हैं. नीचे दिया हुआ प्रत्येक बयान पढ़िए. अगर आपको लगता है कि कोई बयान सही है तो 'सही' पर निशान लगाइए. अगर आपको लगता है कि बयान गलत है तो 'गलत' पर और अगर आपको इस बारे में कोई जानकारी नहीं है तो 'पता नहीं' पर निशान लगाएं.

	ग़लत	सही	पता नहीं
1. **व्हेल** मछली की संदेश पहुंचाने की शक्ति इतनी अधिक होती है कि अगर कोई व्हेल ऐन्टार्कटिका में हो तो वो अलास्का में मौजूद व्हेल की आवाज़ भी सुन सकती है.	☐	☐	☐
2. फ़्रांस के दक्षिणी क्षेत्र में पाए जाने वाले **कौओं** की 'बोली', उत्तरी क्षेत्र में रहने वाले कौओं से अलग होती है.	☐	☐	☐
3. अगर कोई **हंस** चाहे वो नर हो या मादा, घायल हो जाए और वो अपने झुंड के साथ चल न सके तो बाक़ी हंस उसके पास से तब तक नहीं हटते जब तक कि वो अच्छा न हो जाए या मर न जाए.	☐	☐	☐
4. **हिरनों** के बारे में जाना जाता है कि वो ऐसे हिरनों का मार्गदर्शन करते हैं जो अंधे हो गए हों.	☐	☐	☐
5. **हाथी** दूसरे हाथी की मौत का सोग मनाते हैं और दुख में रोते भी हैं.	☐	☐	☐
6. **चींटियाँ** अपनी स्पर्श-इंद्रियों को एक दूसरे से छूती हैं, जैसे कि वो हाथ मिला रही हों. इस तरह वो अपनी जाति की चींटियों से जान पहचान का इज़हार करती हैं.	☐	☐	☐
7. लड़ाई के बाद **चिम्पांजी** हारने वाले या हारने वाली की हौसला अफ़ज़ाई के लिए उसकी कमर में बांहें डालते हैं या उसकी हालत को सुधारते हैं.	☐	☐	☐
8. कुछ **पक्षी** अपनी टूटी हुई हड्डी को जोड़ने और उसका इलाज करने के लिए मिट्टी और पौधों का इस्तेमाल करते हैं.	☐	☐	☐
9. ऐसी मिसालें सैंकड़ों बार सामने आई हैं कि **कुत्तों** और **सुअरों** ने इनसानी बच्चों को खतरे से बचाने के लिए उनकी रक्षा की.	☐	☐	☐

भाग 3/पशु-परियोजना

वैसे तो हमें जानवरों की भाषा पूरी तरह समझने में काफ़ी समय लगेगा, लेकिन फिर भी हम ये ज़रूर समझ सकते हैं कि वो क्या सोचते हैं और महसूस करते हैं. किसी एक जानवर को लीजिए और उसके प्राकृतिक निवास की छानबीन कीजिए. फिर इस पन्ने को उलटिए और उस जानवर की दृष्टि से 'संपादक को एक पत्र' लिखिए कि उसे अपने घर की सुरक्षा के प्रति क्या खतरा है.

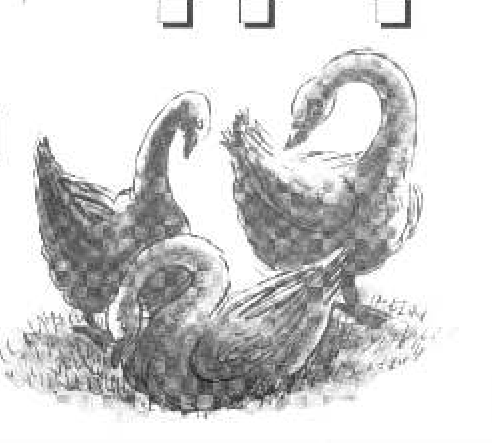

©2001 To learn more about animals, check out: www.CompassionateCitizen.org

जानवर और उनकी भावनाएं

इस बात को समझने के लिए कि जानवर अपनी ज़िंदगी को कैसे महसूस करते हैं, हमें उनके प्रति सहानुभूति का रवैया अपनाना होगा. यानी उन्हें अच्छी तरह समझने के लिए हमें उनकी ज़रूरतों और भावनाओं को पहचानना होगा. जानवर के प्रति सहानुभूति के इज़हार के लिए एक उदाहरण पेश है. ऐना सेवेल के साहित्यिक उपन्यास, **'ब्लैक ब्यूटी'** या ऑटोबायोग्राफ़ी ऑफ़ ए हॉर्स की कुछ पंक्तियां पढ़िए. ये उपन्यास एक घोड़ी की आत्मकथा है. इस उपन्यास में जिंजर नाम की ये घोड़ी ब्लैक ब्यूटी को अपने उन अनुभवों के बारे में बताती है जो उसे इनसानों के ज़रिए मिले थे. इन पंक्तियों को पढ़ने के बाद सोचिए कि लेखक ने किस तरह जिंजर और उसके दुख-दर्द को अपने उपन्यास में दर्शाया है.

वो आदमी जो हमारी देखभाल करता है, उसने अपनी सारी ज़िंदगी में कभी मुझसे प्यार के दो शब्द नहीं कहे. मेरा मतलब ये नहीं है कि वो मेरे साथ बुरा सलूक करता था. पर हमें खाने के लिए भरपूर चारा मिल जाए और सर्दियों में रहने के लिए छत, इससे ज़्यादा उसने हमारे बारे में कुछ और नहीं सोचा. कुछ आवारा क़िस्म के लड़के अक्सर हमारे फ़ार्म के आगे से गुज़रते वक़्त हम पर पत्थर बरसाया करते थे. जिससे हमें उछल उछल कर दौड़ लगानी पड़ती थी. मैं कभी घायल तो नहीं हुई, पर घोड़े के एक छोटे बच्चे का चेहरा बुरी तरह ज़ख़्मी हो गया था. हमारे दिल में ये बात घर कर गई थी कि इनसानों के बच्चे हमारे दुश्मन होते हैं.''

''मुझे वो ज़माना याद है जब हरे भरे मैदान में हमें उछलने कूदने का ख़ूब मौक़ा मिलता था. एक दूसरे के पीछे दौड़ने में हमें बहुत मज़ा आता था. लेकिन फिर जल्द ही मेरा बुरा वक़्त आ गया. मुझे पकड़ने के लिए कई आदमी आ गए. एक आदमी ने मुझे मेरी नाक से पकड़ा; इतनी ताक़त से कि मेरी सांस रुक गई. फिर उसने बड़ी ज़ोर से मेरे गले में रस्सी बांधी और मेरे मुंह में सलाख़ घुसेड़ दी. एक आदमी मुझे रस्सी से पकड़ कर आगे से घसीटता हुआ ले चला और दूसरे ने पीछे से डंडे बरसाने शुरू किए. मनुष्य की मेहरबानियों का ये मेरा पहला तजुर्बा था...''

''.... मैं जो उमंगों से भरी हुई थी... अब खुली हवा के बजाए अस्तबल में रोज़ बंद रहना मेरे लिए किसी बुरे सपने से कम नहीं था. मुझे बड़ी झुंझलाहट और चिढ़ सी होती थी और मैं आज़ादी के लिए छटपटाती थी.''

भाग 1

आत्मकथा का ये अंश जिसे आपने अभी पढ़ा, दर्शाता है इस हकीक़त को कि **सहानुभूति** ही वो मूल तत्व है जो जानवरों की भावनाओं को समझने में मदद करता है. अब नीचे दी हुई प्रत्येक पंक्ति को पढ़िए और जो ख़ाली जगह दी गई है, वहां आप अपने उन एहसासों को लिखिए जो आपके ख़याल से हर एक जानवर ख़ुद महसूस करता होगा.

1. किसी कुत्ते को कड़ी सर्दियों की रात में गरम कमरे में रहने के लिए जगह दी जाए तो वो महसूस करेगा...

_______________ _______________ _______________ _______________ _______________

2. एक थके हुए बैल या घोड़े को भारी गाड़ी घसीटने के लिए कोड़े लगाए जाएं तो वो महसूस करेगा...

_______________ _______________ _______________ _______________ _______________

3. एक बछड़े को अगर उसकी मां से अलग कर दिया जाए तो वो महसूस करेगा...

_______________ _______________ _______________ _______________ _______________

भाग 2

अब अपनी कल्पना को थोड़ा और आगे बढ़ाइए. अपनी पसंद के जानवर को लीजिए और सोचिए कि आप वो जानवर हैं. इस पन्ने की दूसरी तरफ़ उस जानवर के दृष्टिकोण से एक कहानी लिखिए, जिसका आधार हो ये विषय : 'मेरी तीन कामनाएं' अपनी कहानी को एक शीर्षक दीजिए. फिर दूसरे पन्ने पर इसी कहानी से संबंधित एक चित्र बनाइए. उसके बाद अपनी कहानी और चित्र अपनी कक्षा के अन्य छात्रों को दिखाइए.

©2001 To learn more about animals, check out www.CompassionateCitizen.org

बदलता समय, बदलते विचार.

इतिहास गवाह है कि मनुष्य ने जानवरों को सिर्फ़ अपने फ़ायदे के लिए इस्तेमाल किया.

और हम ये समझने में अक्सर नाकाम रहे कि जानवरों की भी भावनाएं होती हैं. वो भी भय, पीड़ा और ख़ुशी महसूस करते हैं... बिलकुल हमारी तरह.

भाग 1 अगर समाचार पत्र प्राचीन काल में भी होते तो उस समय हमें इस तरह की सुर्ख़ियां देखने को मिलतीं. प्रत्येक सुर्ख़ी (हेडलाइन) को पढ़िए और अंदाज़ा लगाइए कि उन घटनाओं के कारण मनुष्य ने कैसे जानवरों के इस्तेमाल को कम करना शुरू किया होगा.

गुफा में रहने वालों ने अब हड्डी के बजाए पत्थर को अपना औज़ार बनाना शुरू कर दिया.

लगभग 70,000 वर्ष ई.पू. ______________

आधुनिक पहनावे के लिए लिनेन पहली पसंद.

लगभग 4,000 वर्ष ई.पू. ______________

अब घरों में पेट्रोलियम पदार्थ से दीप जलेंगे, न कि व्हेल की चरबी से.

लगभग सन् 1860 ______________

'बिना घोड़े की गाड़ी', सड़कों पर दौड़ी.

लगभग सन् 1903. ______________

आ गया बिना सिलवटों वाला सिंथेटिक कपड़ा. रेशमी कपड़े की तरह ही चमक-दमक वाला.

लगभग सन् 1960 ______________

कंप्यूटर मॉडलों के लिए अनुसंधानकर्ताओं की दौड़

लगभग सन् 1980. ______________

अब जंगलों की सैर में कैमरे ने ली बंदूक़ की जगह.

लगभग सन् 1990. ______________

भाग 2 जानवरों के प्रति लगाव और स्नेह बढ़ रहा है, लेकिन फिर भी अपने फ़ायदे के लिए मनुष्य द्वारा उनका इस्तेमाल आज भी जारी है. नीचे दिए गए जानवरों के इस्तेमाल को पढ़िए और उनसे सहानुभूति रखते हुए बताइए कि उनका विकल्प क्या हो सकता है. एक अलग पन्ने पर लिखिए.

1. कक्षा में मेंढक की चीरफाड़.

2. जंगली जानवर, जैसे भालू, बंदर और सांपों को पकड़ कर उनसे तमाशा करवाना.

3. जानवरों को मार कर खाने के लिए उन्हें पालना.

4. पंख, ऊन और चमड़े के लिए जानवरों को मारना.

©2001 To learn more about animals, check out: www.CompassionateCitizen.org

इनसानी भावनाओं को जगाएं

हम सभी अपनी ज़िंदगी में बदलाव ला कर इस बात को सुनिश्चित कर सकते हैं कि जानवरों के प्रति हमारा बरताव हमदर्दी और प्यार का होगा. हम औरों को भी ये भावना जगाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं. वो 'सुनहरे उसूल' जो हम इनसानी रिश्ते में एक दूसरे के लिए अपनाते हैं, हमें चाहिए के हम उन्हें जानवरों के साथ भी अपनाएं.

'जो तुम अपने लिए करना पसंद करते हो, वही दूसरों के लिए भी करो.'

नीचे कुछ मिसालें दी गई हैं, जहां जानवरों के साथ वैसा बरताव नहीं किया जाता, जैसा ऊपर लिखे गए सुनहरे उसूल में कहा गया है. नीचे दी हुई ख़ाली जगह में लिख कर बताइए कि आप इस मिसाल को किस तरह बदल कर सुनहरे उसूल के अनुसार बना सकते हैं.

1. नज़दीक के चिड़िया घर या किसी सर्कस में आपने देखा कि एक भालू कड़ी धूप में बिना कारण यूं ही घूम रहा है.

(अ) ये घटना किस तरह सुनहरे उसूल के ख़िलाफ़ है?

____

(ब) इस मामले में आपकी मदद क्या होगी?

____

2. आपने देखा कि एक भरी पुरी सड़क के किनारे एक पक्षी घायल पड़ा है और लोग उस पर ध्यान दिए बिना आ जा रहे हैं.

(अ) ये घटना किस तरह सुनहरे उसूल के ख़िलाफ़ है?

____

(ब) इस मामले में आपकी मदद क्या होगी?

____

3. स्कूल से आते या जाते समय आपने देखा कि एक कुत्ता ज़ंजीरों से बंधा है और उसके पास खाने-पीने के लिए कुछ नहीं है.

(अ) ये घटना किस तरह सुनहरे उसूल के ख़िलाफ़ है?

____

(ब) इस मामले में आपकी मदद क्या होगी?

____

4. आपने देखा कि आपका जिगरी दोस्त नदी से एक कछुआ उठा लाया है.

(अ) ये घटना किस तरह सुनहरे उसूल के ख़िलाफ़ है?

____

(ब) इस मामले में आपकी मदद क्या होगी?

____

5. आपने देखा कि कोई व्यक्ति मुर्गी को उलटा लटकाए लिए जा रहा है.

(अ) ये घटना किस तरह सुनहरे उसूल के ख़िलाफ़ है?

____

(ब) इस मामले में आपकी मदद क्या होगी?

____

©2001 To learn more about animals, check out www.CompassionateCitizen.org

जानवर और उनकी भावनाएं II - पढ़ने के लिए.

छात्र : ये चार कहानियाँ हैं, जो ये बताती हैं कि जानवर क्या सोचते और महसूस करते हैं. ऐसा कई बार हुआ है कि मनुष्य ने कोई कारनामा अंजाम दिया हो. वो कई बार बिछड़े हुए अपनों के लिए रोया भी है. लोगों के साथ उसने झगड़े भी किए. हँसी मज़ाक में उसने ठहाके भी लगाए. क्या ऐसे मौक़े जानवरों की ज़िंदगी में नहीं आए होंगे?

इन चार कहानियों को पढ़िए और सोचिए कि जानवरों की भावनाएंक्या होंगी. क्या कभी आपने भी वैसा ही महसूस किया है? कहानी पढ़ने के बाद ये लिख कर बताइए कि जानवरों ने इस कहानी में क्या महसूस किया होगा. उसके बाद अपने टीचर की सहायता से उस समय की घटना को लिखने की कोशिश कीजिए जब आपने भी वैसा ही महसूस किया था, जैसा इस जानवर ने महसूस किया है. और फिर आपने उस वक़्त क्या किया था, वो भी लिखिए.

शिक्षक : इन चारों कहानियों से ये बात ज़ाहिर होती है कि जानवर किस तरह इनसानों की तरह भावनाओं का एहसास करते हैं और उनकी प्रतिक्रियाएं भी इनसानों की तरह ही होती हैं. छात्रों से कहिए कि वे छोटे छोटे समूह बना कर या अपनी क्लास में ये कहानियां पढ़ें. फिर आपस में सोचविचार करें कि इन कहानियों के जानवरों ने किस तरह अपनी भावनाओं को व्यक्त किया होगा और क्यों उन्होंने उस तरह अपनी प्रतिक्रिया ज़ाहिर की, जैसा कि कहानी में बताया गया है. फिर छात्रों से कहें कि वे याद करें कि क्या कभी उन्होंने भी ऐसी ही भावनाओं का एहसास किया है. उस वक़्त उन्होंने क्या किया था? उनकी प्रतिक्रिया क्या थी?

छात्रों से कहें कि वो हर कहानी पर अपनी एक से तीन यादें लिखें. ऐसी यादें जब उन्होंने कुछ इसी तरह का अनुभव किया था, जैसा कि इन जानवरों ने इन कहानियों में किया है. उनसे कहें कि वे इनमें से अपनी सबसे मनपसंद या दिलचस्प याद को चुनें और उस पर एक चंद पंक्तियां लिखें. बताएं कि उनका बरताव इस याद में क्यों उस जानवर या जानवरों की तरह था. छात्रों की लिखी बातों को जमा करके एक अद्‌भुत कक्षा पुस्तक बनाएं. छात्रों को एक से अधिक यादगार घटनाएं लिखने के लिए प्रोत्साहित करें.

'कम्पैशनेट सिटीज़न' का ये विस्तार एक अकेली लिखने की गतिविधि या संबंधित पढ़ने की सामग्री को स्प्रिंगबोर्ड के तौर पर प्रयोग में लाया जा सकता है. अगर आप एक संपूर्ण यूनिट बनाना चाहते हैं, तो छात्रों से ये कह कर गतिविधि की शुरूआत करें कि वे जानवरों के बारे में पढ़ेंगे और सीखेंगे. उपरोक्त गतिविधि के बाद, छात्रों को बुक रिपोर्ट के लिए पुस्तक-सूची से एक पुस्तक चुनने के लिए कहें, जो उन्हें इस यूनिट के अंत में दिया जाएगा. छात्रों से कहें कि वो ज़बानी बताएं कि पुस्तक का विषय क्या है. फिर पुस्तक से एक छोटा अंश लें, जिसमें किसी जानवर ने अपनी भावनाएं व्यक्त की हो, और छात्र से कहें कि वो उसे ऊंची आवाज़ में पढ़ कर सुनाए. हो सकता है छात्र अपनी यादगार घटनाओं को भी इसी अंदाज़ में पढ़ कर सुनाना चाहें.

जानवर - जीवन के रक्षक!

अंधेरी रात के पंजों से भारतीय कुत्तों के एक झुंड ने इनसान के बच्चे को बचाया.

मॉन्टगोमैरी जरनल (मैरीलैन्ड, यूएसए) 31 मई, 1996 से रूपांतरित.

प्रेस ट्रस्ट ऑफ़ इंडिया के अनुसार, ये कलकत्ता में सन् 1996 की एक सर्द शाम थी. आवारा और भूखे कुत्तों का एक झुंड कचरे के एक ढेर के पास खाना तलाश कर रहा था. तभी उन कुत्तों ने एक छोटे बच्चे को उस ढेर पर बैठे देखा. बच्चा ठंड के कारण रो रहा था. कुत्तों ने इससे पहले कभी इनसान के बच्चे को नहीं देखा था. लेकिन उन्होंने खाना ढूंढना बंद कर दिया और उस लावारिस बच्चे के पास बैठ गए. कचरे के इस ढेर के अलावा भी बच्चे की जान को बहुत ख़तरा था. उसके पेट में कुछ नहीं था और वो सर्दी से कपकपा रहा था.

रात बहुत लंबी थी. बच्चा भूखा था, भीग चुका था और कमज़ोर हो गया था. गंदगी के ढेर पर बच्चे को नींद कहां से आती. कुत्ते रात भर वहीं रहे. सुबह जब एक औरत वहां से गुजर रही थी तो उसने बच्चे को देखा. उसने बच्चे को उठाना चाहा तो कुत्तों ने कोई आपत्ति नहीं की, शायद उन्होंने सोचा कि वो औरत बच्चे को किसी सुरक्षित जगह ले जाएगी. औरत बच्चे को पुलीस थाने ले गई. कुत्ते भी साथ साथ गए और थाने के दरवाज़े पर ही खड़े रहे. बच्चे के माँ-बाप नहीं मिल सके, इसलिए उसे मदर टेरेसा के आश्रम में पहुँचा दिया गया.

कुत्तों की ऐसी ही कई कहानियाँ आप दुनिया के कोने कोने में पाएंगे. और सिर्फ़ कुत्ते ही क्यों. सुअर, डॉल्फ़िन, नुर्गीया और यहां तक कि कंगारू भी इनसानों की मदद करके अपना नाम इतिहास में दर्ज करा चुके हैं.

©2001 To learn more about animals, check out www.CompassionateCitizen.org

आइए जानवरों से बातें करें !

कोको एक ऐसी मादा गोरिला है जिसने 'अमेरिकन साइन लैंगवेज' सीखी है और अपने इनसानी परिवार को गोरिलाओं और उनकी भावनाओं के बारे में सिखाया है.

जीन क्रेगहेड जॉर्ज की पुस्तक 'एनिमल्स हू हैव वन अवर हार्ट्स' से रूपांतरित. न्यू यॉर्क: हार्पर कॉलिन्स, 1994.

कोको ने सैंकड़ों शब्दों की पहचान सीखी है. उसकी देखभाल करने वाली महिला फ्रेन्सिन पैटरसन को उसने पहली बार शब्द 'भोजन' का संकेत दिया तो फ्रेन्सिस पैटरसन ने उसे भोजन ला कर दिया. कोको इस बात से इतनी ख़ुश हुई कि उसने एक बाल्टी अपने सिर पर उठा लिया और सारे घर में दीवानों की तरह चक्कर काटने लगी.

कोको उन चीज़ों से संबंधित शब्द बहुत जल्द सीख जाती थी जो उसे पसंद थे. पर उन शब्दों को सीखने में उसे काफ़ी समय लगता था जो उसे नापसंद ते. 'अंडे' से उसे नफ़रत थी, इसलिए उसे इस शब्द के संकेत को सीखने में दो महीने लग गए. पर चूंकि उसे 'बेरी' बहुत पसंद थी, इसलिए इसे सीखने में उसे एक मिनट भी नहीं लगा.

कोको को मज़ाक करना भी ख़ूब आता था. जब उससे पूछा गया कि उसके सफ़ेद तौलिए का रंग कैसा है जब बार बार उससे पूछा गया तो उसने झिल्ला कर लाल रंग का संकेत दिया. उससे दोबारा पूछा गया तो भी उसने लाल रंग की तरफ़ ही इशारा किया. मगर फिर शरारत से उसने तौलिए से लाल रंग का एक धागा निकाला और बताया, ये लाल नहीं तो और क्या है ! और फिर बड़े ज़ोर से हंस पड़ी.

कोको को आइना देखना बहुत पसंद था. वो अपने कमरे को ध्यान से साफ़ करती थी. और अपने साथी जानवरों के साथ खेलती थी. जब उसकी सहेली बिल्ली मर गई तो उसे बड़ा सदमा पहुंचा. उसके दुख को दूर करने के लिए बिल्ली का एक बच्चा लाया गया. बिल्ली के बच्चे और उसके दोस्तों का वो बड़े प्यार और दुलार के साथ ख़याल रखती थी.

कोको को जो चीज़ या जो लोग पसंद नहीं थे, वो उसका इज़हार कर देती थी. अगर उसे कोई आदमी पसंद नहीं आता था तो वो उसे 'रोटॅन टॉयलेट' यानी गंदा बाथरूम कह कर पुकारा करती थी. उसका एक कम उम्र गोरिला दोस्त था, जिसका नाम था माइक. जब वो उससे नाराज़ होती तो उसे माइक नट कह कर पुकारती. उसके एक शिक्षक, रॉन कॉन ने जब उसे उसकी शरारत पर सज़ा दी तो उसने जल कर उसे 'स्टुपिड डेविल डेविल हेड' का ख़िताब दिया.

कुछ दिनों बाद फ्रेन्सिन पैटरसन को ये महसूस हुआ कि कोको और माइक जैसे गोरिलाओं का निवास वहीं होना चाहिए, जहां वो प्राकृतिक रूप से रहना पसंद करें. वो अपनी धरती से दूर कर दिए गए जहां कोको और माइक जैसे गोरिलाओं को फलों से भरे पेड़ों पर चढ़ने और हरे भरे मैदान में ख़ूब खेलने का मौका मिलता.

कोको ने संकेतों की मदद से अपने और अपनी नसल के लोगों के बारे में अपने विचारों को कुछ इस तरह कह कर व्यक्त किया, ''गोरिला ख़ूबसूरत जानवर.''

क्या आप ये भी जानते हैं?

- **पक्षी अलग अलग संदेशों के लिए अलग अलग आवाज़ें निकालते हैं. जैसे भूख, बारिश, ख़तरा, और मदद. कोयल की कूक तो बारिश के आने का पैग़ाम ही है.**
- **एक ही स्थान पर रहने वाले कूबड़दार व्हेल एक ही तरह के गीत गाते हैं.**
- **बिजली मछलियाँ अपने संकेत (सिगनल) दूसरी मछलियों को भेजती हैं, पर वो ख़ुद अपनी आवाज़ नहीं सुन सकतीं.**

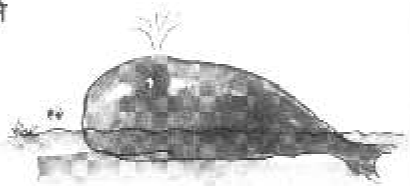

(एनिमल बिहेवियर, जिम हॅलिडे, इंडी., 1994)

©2001 To learn more about animals, check out www.CompassionateCitizen.org

जब कोई मर जाता है तो जानवर दुखी होते हैं !

दामिनी नाम की एक हथिनी ने कई साल तक तकलीफ़ों के दिन गुज़ारे. उसके मां-बाप कौन थे और वो कहां पैदा हुई, ये कोई नहीं जानता था. जब वो 72 वर्ष की हुई तो उसे उन लोगों के पंजे से छुड़ा लिया गया जो उसे ग़ैरक़ानूनी तौर से बाहर ले जाने की कोशिश कर रहे थे. लखनऊ, भारत के चिड़िया घर प्रिंस ऑफ़ वेल्स में पांच महीने तक अकेले रहने के बाद उसने चम्पाकली नामक एक हथिनी से दोस्ती की. इसे भी चिड़िया घर में रहने के लिए लाया गया था.

एसोसिएटेड प्रेस, लखनऊ, भारत से रूपांतरित.
16, मई, 1999.

चम्पाकली को नई दिल्ली से 500 कि.मी. से भी ज़्यादा दूर स्थित दुधवा नैशनल पार्क से यहां लाया गया था. चम्पाकली को मजबूर करके पर्यटकों की सवारी कराई जाती थी. जब पार्क के अधिकारियों ने देखा कि चम्पाकली मां बनने वाली है तो उन्होंने उसे इस चिड़िया घर में भेजने का फ़ैसला किया. चिड़िया घर के लोगों को ये पता नहीं था कि मां बनने वाली इस हथिनी की देखभाल कैसे की जाए. लेकिन वहां दामिनी जो थी. उसने चम्पाकली को अपनी 'छोटी बहन' के रूप में स्वीकार कर लिया. दोनों जिगरी सहेलियां बन गईं. वो हमेशा साथ साथ रहतीं, एक दूसरे से धीरे धीरे बातें करतीं और एक दूसरे को प्यार से दुलारतीं.

हाथियों को सामाजिक जीवन गुज़ारना पसंद है. वो एक दूसरे से रिश्ता कायम करते हैं और जम कर दोस्ती करते हैं. हाथी एक दूसरे का ख़्याल भी रखते हैं और दूसरे हाथी के बच्चों की देखभाल करते हैं. जब छोटे या बीमार हाथी ख़तरे में होते हैं, तो दूसरे हाथी साथ मिल कर उनकी मदद करते हैं. जब कोई हाथी मर जाता है तो दूसरे हाथी उसके रिश्तेदारों को तसल्ली देते हैं. वे मरे हुए हाथी की हड्डियों को छूते हैं. विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह हाथी अपने मृत साथी को याद करते हैं.

चम्पाकली और दामिनी का रिश्ता सगी बहनों की तरह हो गया था. जब इलाज में किसी कमी के कारण चम्पाकली और उसके बच्चे की मौत हो गई तो दामिनी की आंखों से आंसुओं के झरने बह निकले. उसने खाना-पीना बंद कर दिया. उसने अपने आपको हर काम से अलग कर दिया था. 24 दिनों तक उसकी यही हालत रही. अधिकारियों और डॉक्टरों ने उसकी हालत सुधारने की बहुत कोशिश की, पर वो बच न सकी. चिड़िया घर के लोगों का मानना है अपनी सहेली चम्पाकली की मौत से उसका दिल टूट गया था. अब उसकी ज़िंदगी में कुछ नहीं बचा था. इसीलिए उसने मौत को गले लगा लिया. विशेषज्ञ कहते हैं कि अगर दुख की इस घड़ी में दामिनी के साथ कुछ और हाथी होते तो वो उसका दिल बहला कर उसे मौत के मुंह से बचा लेते.

क्या आप ये भी जानते हैं ?

- **गिगी चाची नाम की एक बूढ़ी चिम्पांज़ी ने, जिसकी अपनी कोई औलाद नहीं थी, चिम्पांज़ी के ऐसे दो अनाथ बच्चों को गोद लिया जिनके मां-बाप मार डाले गए थे.** (*दि ग्रेट एप प्रोजेक्ट*, पावला केवालिरी और पीटर सिंगर, ईडीएस., 1993)
- **हाथी अक्सर अपने रिश्तेदारों की रक्षा करते हैं कि वे कहीं से गिर कर मर न जाएं. ये एक दूसरे के लिए भोजन का प्रबंध भी करते हैं. जब कोई हाथी मर जाता है तो वो उसका सोग मनाते हैं और कभी कभी उसे दफ़न भी करते हैं !** (*वेन एलिफेंट्स वीप: दि इमोशनल लाइव्स ऑफ़ एनिमल्स*, जेफरी मूसेफ मेसन और सूसन मैक्कार्थी, 1995)
- **हंस अपने जोडे का साथ जीवन भर निभाते हैं. अगर उनमें से कोई मारा जाए तो वो सोग मनाते हैं. ये भी देखा गया है कि हंस अपने अंधे साथियों को खाना खिलाते हैं !** (*दि सोल्स ऑफ़ एनिमल्स*, गैरी कोवल्सकी, 1991)

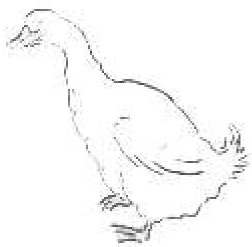

©2001. To learn more about animals, check out www.CompassionateCitizen.org

जानवर हीरो से कम नहीं !

न्यूफ़ाउडलैन्ड के एक कुत्ते टैन्ग ने ज़बरदस्त तूफ़ान में डूबते जहाज़ के 92 मुसाफ़िरों की जान बचाई.

टिम जॉन्स की डॉग हीरोज़ से रूपांतरित. सीटल : एपीसेंटर प्रेस, 1995.

वो दिसंबर 1919 की एक बरफानी तूफ़ान की रात थी. एथी नामक एक जहाज़ न्यूफ़ाउंडलैन्ड, कनाडा के साहिल से क़रीब चट्टानों से टकरा गया. समंदर की मौजों ने उसे चट्टानों के बीच फंसा दिया. 93 लोग जहाज़ में मौजूद थे. जहाज के अमले ने साहिल पर खडे लोगों की तरफ़ रस्सी फैंकना चाही, पर वो इसमें कामयाब न हो सके. एक मुसाफ़िर हिम्मत करके रस्सी के साथ समंदर में कूद पड़ा, ताकि वो तैर कर साहिल तक पहुंच जाए और मदद हासिल कर सके, पर समंदर की लहरों ने उसकी बली ले ली.

तभी जहाज़ के कप्तान की नज़र टैन्ग पर पड़ी. वो भी जहाज़ पर मौजूद था. कप्तान को उम्मीद की एक किरन सी नज़र आई. उसने रस्सी टैन्ग को दी. टैन्ग समझ गया कि उसे क्या करना है. उसने रस्सी को अपने दांतों से पकड़ा और समंदर में कूद गया. समंदर की ऊंची उठती ग़ज़बनाक लहरें और तेज हवाएं उसे साहिल तक जाने से रोक रही थीं. मौजें उसे बार बार पीछे की तरफ़ धकेल रही थीं. पानी उसकी आंखों और कानों में जा रहा था, लेकिन टैन्ग ने हिम्मत नहीं हारी. वो अपनी पूरी ताकत से साहिल की तरफ़ जाने की कोशिश कर रहा था. आख़िर उसकी मेहनत रंग लाई और वो रस्सी के साथ साहिल तक पहुंच ही गया. वहां खड़े लोगों ने उसे साहिल पर खींच लिया. उन्होंने उसके मुंह से रस्सी निकाली और उसे एक मजबूत चीज से बांध दिया. फिर उस रस्सी की मदद से लोगों ने डूबते जहाज के लोगों को बचाया. एथी के सारे 92 मुसाफ़िरों की जान बच गई.

इतिहास हमें ये नहीं बताता कि साहिल पर पहुंचने के बाद टैन्ग ने क्या महसूस किया. पर हम ये कल्पना जरूर कर सकते हैं कि जब इस जोशीले कुत्ते ने सुरक्षित यात्रियों को साहिल पर आ कर ख़ुशी ख़ुशी एक दूसरे के गले मिलते देखा होगा तो उसके दिल में भी संतोष की लहर जाग उठी होगी. मशहूर इंश्योरेंस कंपनी लॉयड्स ऑफ़ लंडन ने टैन्ग को उसकी बहादुरी के लिए एक मेडल दिया, जिसे टैन्ग ने भी गर्व के साथ सारी जिंदगी अपने गले में डाले रखा.

क्या आप ये भी जानते हैं ?

- **एक कुत्ते और एक बतख ने एक मां को उसके डूबते बच्चे की जान बचाने में मदद की.** (*रियल एनिमल हीरोज़*, पॉल ड्रिव स्टीवन्स, 1989)
- **जंगली जीवन का निरीक्षण करने वाले एक व्यक्ति ने एक बार देखा कि गेंडे का एक बच्चा कीचड़ में फंस गया है और एक हाथी लगातार उसे बाहर निकालने की कोशिश कर रहा है. मजे की बात ये थी कि बच्चे की मां कुछ गलत समझ कर हाथी पर हमले करती जा रही थी.** (*वेन एलिफेंट्स वीप: दि इमोशनल लाइव्स ऑफ़ एनिमल्स*, जेफरी मूसेफ मेसन और सूसन मैककार्थी, 1995)

जानवरों पर पढ़ने योग्य पुस्तकें

- मार्शल सॉन्डर्स की *ब्यूटीफुल जो*. विवन व्युरी द्वारा पुनःलिखित, 1990.
- ऐना सिवेल की *ब्लैक ब्यूटी*, 1877.
- आर्ट बुचवॉल्ड की *दि बोलो कैगर*, 1983.
- जेम्स हेरियट की *कैट स्टोरीज़*, 1994.
- ई.बी.व्हाइट की *शैरलोट्स वेब*, 1952.
- पॉल गौबल की *दि गर्ल हू लव्ड वाइल्ड हॉर्सेस*, 1978.
- ब्राइन वाइल्डस्मिथ की *हंटर एंड हिज़ डॉग*, 1989.
- बायर्ड बेलर की *इन हॉक, आई एम योर ब्रदर*, 1976.
- जीन क्रेगहेड जॉर्ज की *जूली ऑफ़ दि वोल्व्स*, 1974
- सूसन जेशकी की *परफ़ेक्ट दि पिग*, 1980.
- कैरोलीन एरनॉल्ड की *पेट्स विदाउट होम्स*, 1983.
- जोसफ़ बेल की *सैन्डी ऑफ़ लगूना*, 1992.
- रॉबर्ट ओ'ब्राइन की *दि सीक्रेट ऑफ़ एनआईएमएच*, 1982
- मारगरेट स्टैन्गार की *दैट व्होल राबर्ट*, 1966.
- डेबरा डुएल की *विलियम्स स्टोरी*, 1992.

©2001 To learn more about animals, check out www.CompassionateCitizen.org